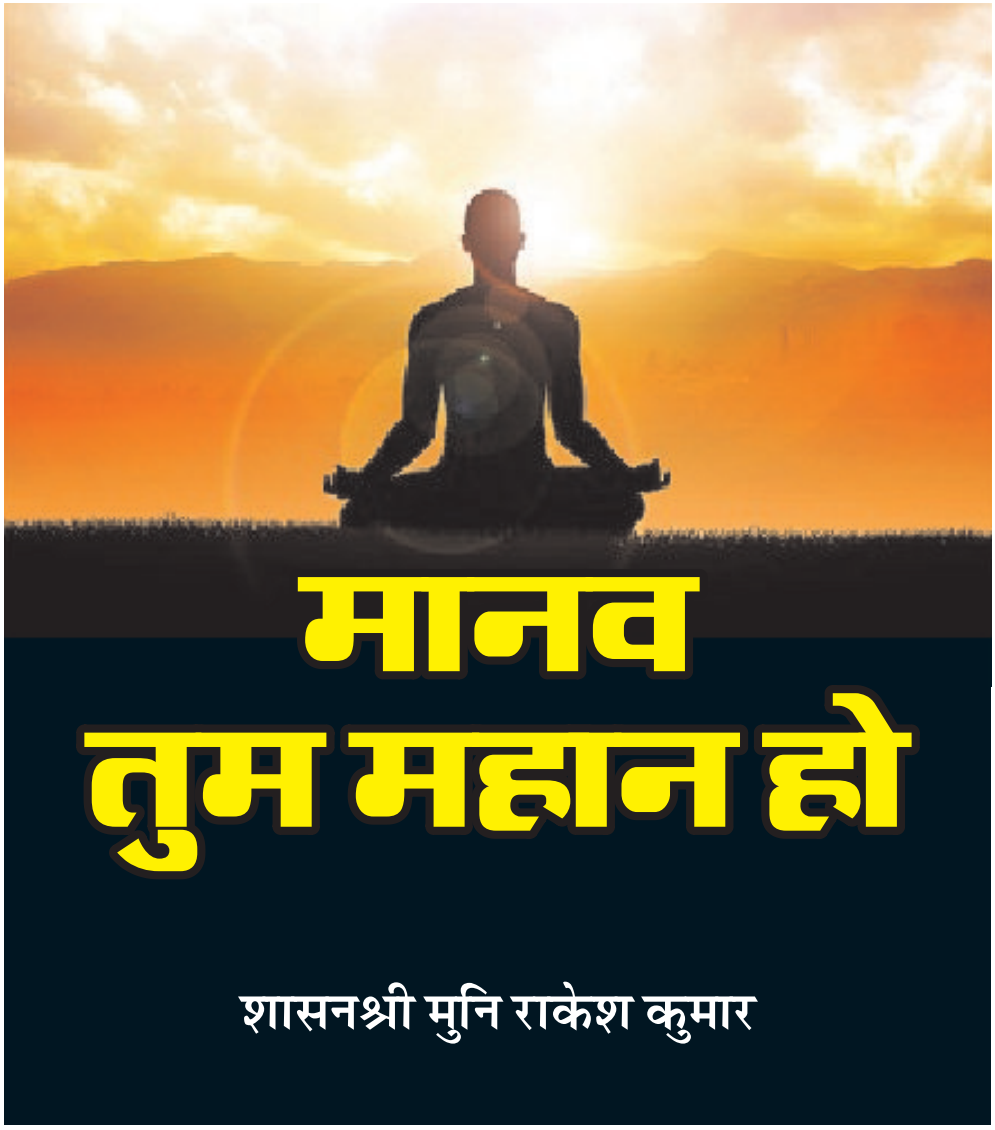

मानव तुम महान हो

शासनश्री मुनि राकेश कुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

'मानव तुम महान हो' सताईस लघु निबंधों का यह संकलन है। जो आज से करीब छह दशक पूर्व (१९६१-६२) देश के प्रतिष्ठित पत्र 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में 'चरैवेति-चरैवेति' शीर्षक से क्रमशः प्रकाशित हुए। जिनकी पाठकों व साहित्यकारों द्वारा बहुत सुन्दर प्रतिक्रिया पढ़ने व सुनने को मिली। यह लघु गद्य 'मानव तुम महान हो' हमें अपनी अर्न्तनिहित शक्तियों को जागृत करने का आह्वान करती है।

मुनि सुधाकर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मानव तुम महान हो

शासनश्री
मुनि राकेश कुमार

सम्पादक
मुनि सुधाकर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२६०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : नवम्बर २०१३

मूल्य : ००/- (..... रुपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिंट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपनी बात

मानव का शरीर और मस्तिष्क विलक्षण है, विश्व पटल पर जितने अद्‌भुत परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वह सब मानव मस्तिष्क का चमत्कार है। फिर भी असंख्य मानव अपनी अन्तर्हित शक्तियों का साक्षात्कार नहीं कर पाते हैं। वे दीनता और हीनता की ग्रंथियों से पीड़ित है। वे दो कदम आगे बढ़ने के लिए वैशाखी की खोज करते हैं। **'मानव तुम महान हो'** इस उद्‌घोष की ऐसे व्यक्तियों के लिए परम आवश्यकता है, जिससे उनके मन की मूर्च्छा दूर हो सके तथा अपने स्वरूप को पहचान सके।

'मानव तुम महान हो' के लघु गद्य लगभग छह दशक पूर्व लिखे गए है। उस समय मेरे दिल्ली (सन् १९६२-६३) में चातुर्मास थे। वहां से प्रकाशित प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में चरैवेति-चरैवेति' शीर्षक से कई महिनों तक ये क्रमशः प्रकाशित हुए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिल्ली से विहार होने के बाद लिखने का क्रम बंद हो गया।

मेरा हर कार्य आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद का परिणाम है।

मुनि सुधाकरजी ने इनको संकलित व सम्पादित करने में बहुत श्रम किया है। इसके लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हूं। मुनि सुधाकरजी ने जनसंपर्क, वक्तृत्व व साहित्य लेखन में अच्छा विकास किया है।

मुनि दीपकुमारजी मेरे सहयोगी है। उनका हर कार्य में सहयोग रहता है।

जैन विश्व भारती
२७ अक्टूबर २०१३

मुनि राकेशकुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रमणिका

१. तुम्हारे उद्धारक तुम ही हो	७
२. राख नहीं आग बनो	९
३. वर्तमान क्षण	११
४. योग्य बनो सफल बनो	१२
५. बढ़े चलो आलोचना तो होगी ही	१४
६. एक ही दिशा में चलो	१५
७. मानव तुम महान हो	१७
८. प्रगति का मंत्र—आगे बढ़ो	१९
९. लक्ष्य का निर्धारण	२१
१०. प्रगति ही जीवन है	२३
११. अपने पथ पर दृढ़ता से बढ़े चलो	२४
१२. पुरुषार्थ	२६
१३. एकाकी ही आगे बढ़ो	२८

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१४. पुरुषार्थ भाग्य का पिता है	३०
१५. जीवन पड़ाव नहीं, यात्रा है	३२
१६. आज का संकल्प कल की सफलता	३४
१७. अनुभव जीवन की महान निधि	३६
१८. सफलता का मंत्र—निरन्तरता	३८
१९. विष-घट या अमृत-कलश	४०
२०. अनुपम उपहार—समय	४२
२१. छिन्द्रान्वेषी मत बनो	४४
२२. मन को दे शांति का संदेश	४६
२३. भाग्य का स्वामी	४८
२४. महान शत्रु आलस्य	५०
२५. तंत्र नहीं मंत्र अपनाओ	५२
२६. खिड़कियां खुली रखो	५४
२७. सम्भव और असम्भव	५५

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१. तुम्हारे उद्धारक तुम ही हो

तुमने उद्धारक खोजने में व्यर्थ ही समय गंवा दिया। कभी सूर्य को नमस्कार किया, कभी चांद को प्रदक्षिणा दी, कभी समुद्र की लहरों के आगे झुक-झुक आत्म-समर्पण किया व कभी पर्वतों के ऊंचे नीचे शिखरों की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा। पर तुम्हारा उद्धारक दूर नहीं है, बिलकुल निकट है, विश्वास रखो, वह स्वयं तुम ही हो।

संसार, भाग्य और प्रकृति सब उसी की सहायता करते हैं, जो स्वयं अपनी सहायता करता है। जिसकी आंखें बन्द है उसके लिए दिनकर की सहस्र रश्मियां भी प्रभात नहीं उगा सकती। रजनीपति की शीतल ज्योत्सना भी उसके लिए वरदान के द्वार नहीं खोल सकती। सितारों की टिमटिमाहट से उसके मूर्च्छित हृदय में प्रेरणा का संचार नहीं हो सकता।

क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि कुम्भकार योग्य मिट्टी को ही घट का आकार प्रदान कर सकता है। ऊसर भूमि में अनुभवी कृषिकार भी सफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं हो सकता। यदि कपड़ा काला है तो कुशल रंगरेज का कला-वैभव भी विफल हो जाता है।

मानव! तुम्हारे भीतर जो छोटा-सा दीपक जल रहा है, वही तुम्हारा उद्धारक और भाग्य विधाता है। उसी की पूजा करो। सांस-सांस में उसी का स्मरण करो। हजारों अर्चनाओं से प्रसन्न नहीं होने वाला सूरज उस स्थिति में आसमान से उतरकर आएगा और ज्योतिर्मय किरणों से तुम्हारे पावों का प्रक्षालन कर स्वयं को कृतकृत्य मानेगा।

नहीं दूसरों के सम्मुख,
तुम गाओ दुःख के गीत।
अपने बल से ही पाओगे,
जीवन-रण में जीत।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२. राख नहीं आग बनो

राख सभी की दया पात्र हैं, उसे शांत और भद्र कहकर संतुष्ट करने की परम्परा सदा से चलती आई हैं। जो महत्त्व आग का हैं, वह उसका कभी नहीं हो सकता। मानव! राख नहीं, आग बनो। झूठे धन्यवादों और प्रलोभनों से ग्रसित होकर अपने तेज को धूमिल मत बनाओ।

मानव! शांति के नाम पर अकर्मण्यता, जड़ता और विचार शून्यता को प्रोत्साहन देना अज्ञान का परिचायक ही नही, अक्षम्य अपराध है। जो परिस्थिति तुम्हारे जीवन को दुर्भेद्य लौह बेड़ियों से बांधकर पर्वत की गहन गुफा में डाल देती है, क्या तुम उसे उचित मानोगे?

जिन्होंने राख और पत्थर की शांति का समर्थन किया है, उन्होंने स्वयं का भी अहित किया है और दूसरों का भी। वास्तविक शांति वही है, जो जीवित है, ज्योतिर्मय है और स्वतंत्रता की ओर आगे बढाती है। जो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मृत है, अंधकार पूर्ण है तथा परतन्त्र बनाती है, वह शांति नहीं है।

मित्र! राख नहीं, आग बनो।

नहीं राख का किन्तु आग का,
अभिनन्दन होता हैं,
सदा चेतनाशील मनुज का,
मूल्यांकन होता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३. वर्तमान क्षण

मानव! यह वर्तमान का क्षण तुम्हारी सबसे बड़ी निधि है। इसे छोटा मत समझो। अपने जीवन की सारी शक्तियां बटोर कर इसका पूरा-पूरा उपयोग करो। यदि तुम इसका सम्मान करोगे तो यह भी तुम्हारा सम्मान करेगा। समय उसी का ध्यान रखता है, जो उसका ध्यान रखता है। उसकी उपेक्षा करने वाला विधि के सारे वरदानों से वंचित हो जाता है।

पथिक! बढ़े चलो। जिस किसी अवस्था में हाथ में आए इस वर्तमान क्षण को भाग्य का ध्रुवतारा समझो। जो एक क्षण का लाभ नहीं उठा सकता, वह हजारों क्षणों का लाभ भी नहीं उठा सकता, यह अनुभवसिद्ध निर्णय है। अतीत के क्षण कब्र में है और भविष्य गर्भ में अतः यह वर्तमान का क्षण ही तुम्हारा सर्वस्व है।

आज, देवता की श्रद्धा से, जो पूजा करता है।
सदा सफलता रस से, उसका जीवन घट भरता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४. योग्य बनो सफल बनो

मानव! आकाश की ओर आंख लगाकर मत देखो। तुम्हारी मंजिल सामने है। चंचल पलकों को एक क्षण के लिए भी उसे इधर से उधर मत होने दो। जीवन के ध्रुव आलोक की पावन रश्मियां तुम्हारे दाएं-बांए घूम रही है। तुम्हारे स्वेदार्द कपोल पलकों का परिचुम्बन करने के लिए आतुर दिखाइ दे रही है। किंतु परमुखापेक्षी रहते हुए तुम उनके स्पर्श का अवसर प्राप्त नहीं कर सकोगे। क्या याद नहीं हैं। दूसरों पर निर्भर रह कर जीवन के अनेक स्वर्णिम अवसर गंवा दिए हैं।

भाग्य उसकी सहायता करता है जो अपनी करता है। अपनी सहायता नहीं करने वाले को भाग्य के कटुकटाक्षों से तिरस्कृत होना पड़ता है। स्वयं की योग्यता और ग्रहण शक्ति के अभाव में अनुकूल से अनुकूल निमित्त का उपयोग भी भस्म में घृत सिंचन से अधिक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं होता। आकाश आदर्श हैं, प्रेरक है, किन्तु चलना तुम्हें ही पड़ेगा। मानव! कदम-कदम पर आधार मत खोज। अन्यथा, तुम न इधर के रहोगे न उधर के।

जिसकी आंखों में अनुपम,
आलोक भरा रहता है।
उसके सम्मुख घोर तिमिर भी,
ज्योतिर्मय बनता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५. बढ़े चलो आलोचना तो होगी ही

मानव! मैं मानता हूं। तप्त गोले के सामने खड़े रहने से भी जनता की आलोचना सहन करना कठिन है। पर घबराने से काम नहीं चलेगा। तुम चाहे जितना अच्छा कार्य करो। प्रगति की प्रतिक्रिया अवश्यंभावी है। विश्व में आज तक जितनी प्रगति हुई है उसका इतिहास देखने से तुम्हें यह पता चल जाएगा। उत्थान का हर चरण कांटों से घिरा रहता है। उसे विरोधों और संघर्षों के घने कुहासे को चीरकर ही आगे बढ़ना होता है।

मित्र! हाथी के पीछे कुत्ते भौंकते रहते हैं किंतु इससे उसका महत्त्व बढ़ता ही है, कम नहीं होता। जिसका जो स्वभाव है वह निभाया जाता है। ईर्ष्यालु और अज्ञानी लोगों द्वारा जलाई गई आलोचना की अग्नि में स्नान करने से ही तुम्हें और तुम्हारी कृति को अमरत्व मिलेगा।

वहीं मनस्वी और तपस्वी,धरती पर है कहलाता।
पर निंदा से तनिक न घबरा, वह आगे बढ़ता ही जाता।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६. एक ही दिशा में चलो

जो मनुष्य मार्ग का निर्धारण नहीं करते हैं वे एक साथ अनेक दिशाओं में बढ़ने का प्रयास करते हैं, वे भटक जाते हैं। जीवन भर चलने पर भी वे मंजिल का स्पर्श नहीं करते।

मानव! लक्ष्य की साधना में पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है। जब तक तन्मय नहीं बनोगे तब तक तुम्हारा प्रयत्न सफल नहीं होगा। यदि तुम दो शिकारों का शिकार एक साथ करना चाहोगे तो दोनों से ही हाथ धोना पड़ेगा।

विश्व में जितने भी महान कार्य हुए हैं, वे एकाग्रतापूर्वक आगे बढ़ने वालों ने ही किए हैं। किंतु लम्बी छलांगे मारने पर भी अस्थिर और चंचल पुरुषों का हृदयपट सदा शून्य और रिक्त रहा है।

मानव! एक ही दिशा में चलो। सिद्धि का अमृत उसे ही मिलता है,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जो उसके सामने अविभक्त और अखंडित श्रद्धा का पात्र लेकर खड़ा होता है।

लक्ष्य बिना जो आंख बंद कर,
मानव चलता जाता।
कोल्हू-बैल की भांति निरन्तर,
वहीं घूमता जाता।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७. मानव तुम महान हो

जीवन एक यात्रा है। रुको मत राही! गति जीवन है, स्थिति मृत्यु। प्रगति तुम्हारे जीवन का सार है। तुम्हारे हर सांस की गति में इसी प्रगति का सन्देश छिपा है। नदी का अस्तित्व बहने में है, रुकने में नहीं। क्या तुम सूखना चाहते हो? 'बढ़ो अथवा मिट्टी में मिलो'—प्रकृति के इस कर्म-संदेश को मत भूलो। प्रकृति का संरक्षण बढ़ने वाले को मिलता है। क्या उस वृक्ष को नहीं जानते, जिसका विकास रुक जाने पर उसको प्रकृति की चिता में भस्म होना पड़ता है।

मानव! तुम महान हो। तुम्हारा अतीत तुम्हारी महत्ता का प्रमाण है। तुम्हारी विलक्षण और अनन्त कर्तृत्व-शक्ति में किसे संदेह हैं? बाहरी सीमाएं तुम्हें बांध नहीं सकती। तुम पूर्ण हो। अपूर्णता तुम्हारा स्वभाव-धर्म नहीं है। वह आगन्तुक हैं, बाहर से आई हुई है। दृश्य-अदृश्य सृष्टि के सबसे बड़े चमत्कार तुम हो। 'नहि मानुषात् हि किंचित्'—महर्षि व्यास

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

की यह वाणी बहुत स्पष्ट है। तुम अमृत-पुत्र हो। मरकर भी अमृत बन सकते हो। तुमने अलभ्य को सुलभ बनाया है, असंभव को संभव बनाया है। मिट्टी के कण-कण में, सागर की लहरों में, क्षितिज की अरुणाई में भरी पड़ी हैं तुम्हारी अमर कहानियां।

तुम अनन्त शक्ति के स्वामी,
कायरता मत लाओ।
बीहड़ और कंटीले पथ से,
नहीं कभी घबराओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८. प्रगति का मंत्र–आगे बढ़ो

एक नवदीक्षित साधु ने भगवान महावीर से आशीर्वाद की याचना की। भगवान ने कहा–'वड्ढमाणो भवाहि य'–आगे बढ़ो। साधना के राजमार्ग में अपने जीवन का पूर्ण समर्पण कर दृढ़ता से आगे बढ़ो।

'गति जीवन है स्थिति मृत्यु'–'वड्ढमाणो भवाहि य'–यह आर्षवचन यही मंगल प्रेरणा देता है।

संसार में ऐसा कोई भी मार्ग नहीं है जिसमें कांटे नहीं हो। हर पथिक को परिषहों की अग्नि में स्नान करना होता है। किंतु जो साहस और संतुलन के साथ परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है, उसके लिए परीषह भी वरदान सिद्ध होते हैं, शूल भी फूल बन जाते हैं।

मानव! महावीर वाणी में लाख, मोम, लकड़ी व मिट्टी के गोलों का वर्णन किया गया है। लाख और मोम के गोले बहुत कमजोर होते हैं। अग्नि का ताप लगते ही पिघल जाते हैं। लकड़ी का गोला ज्वाला में रखने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से भस्म हो जाता है। किंतु मिट्टी का गोला जितनी बार अग्नि स्नान करता है, उतना ही अधिक सबल बन जाता है।

मानव! अपनी श्रद्धा को मिट्टी के गोले के समान मजबूत बनाओ व 'वड्ढमाणो भवाहि य' का प्रेरणा-मंत्र मानस पट पर अंकित कर क्षण-क्षण में आगे बढ़ते चलो।

परम मित्र धरती पर तेरा,
अटल आत्मविश्वास।
आलोकित कर देता जीवन,
उसका शुभ्र प्रकाश।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९. लक्ष्य का निर्धारण

मानव! (चलते रहो तुम) आगे बढ़ते रहो बढ़ना तुम्हारा स्वभाव है। प्रगति के उपासक हो तुम। पर, चलने के लिए मत चलो। बढ़ने के लिए मत बढ़ो। तेली का बैल भी चलता है। पर उससे क्या? अरघट का यंत्र भी घूमता है, पर उसे किनारा नहीं मिलता। तुम चलो, निश्चित चलो, पर लक्ष्य के लिए चलो। राख में घी डालने से कोई उपयोग नहीं होता, बिना उद्देश्य कोई भी कार्य सफल नहीं होता। चलो, निश्चित होकर चलो, पर किसी नैतिक आदर्श की छाया में चलो। सागर की लहरों पर खेलते रहने में जीवन का सार मत समझो, अपनी नजर निश्चित तट पर टिकाए रखो।

तुम चलते अवश्य हो, शरीर से या मन से? यह एक प्रश्न है। चलने के पहले इस प्रश्न का समाधान करो। दूसरों के सामने नहीं, वाणी में नहीं, अपने आपमें करो। मौन की भाषा में करो। सफलता के लिए शरीर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

व मन का समन्वय जरूरी है। अन्यथा कोरे शारीरिक व्यायाम से तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। थकान के सिवा तुम्हारे हाथ और आएगा भी क्या? इस प्रकार चलने का परिणाम निरर्थक होगा। शरीर के साथ, मन के तारों को जोड़ते हुए चलने का प्रयास करो।

सही दिशा में एक चरण का,
बढ़ना ही बढ़ाना है।
बिना लक्ष्य के ज्ञान,
पथिक का चलना बस छलना है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०. प्रगति ही जीवन है

प्राची की अभिनव लाली जागरण का अभिनव संदेश लिए तुम्हें बार-बार जगा रही है, आलस्य का परित्याग करो। उठो! उठो मानव! यह सोने की वेला नहीं है। अकर्मण्यता के चक्रव्यूह को तोड़कर जीवन की उर्वर भूमि में प्रवेश करो। अपनी अन्तर्निहित शक्तियों का उपयोग कर इस मूल्यवान हीरे को और भी चमकीला बनाओ।

मानव! अंगुलियों को ऊंचा-नीचा किए बिना बांसुरी का गीत मुखरित नहीं होता। पड़े-पड़े औजार भी पुराने हो जाते हैं, उन पर जंग लग जाती है। तुम्हारा शरीर अकर्मण्य बन रहा है। जरा ध्यान से देखो। तुम्हारी प्रकृति तुम्हें निष्क्रिय रहने की अनुमति नहीं देती। अब भी सावधान हो जाओ। प्रगति और क्रियाशीलता ही जीवन है। प्रमादी बनकर आत्मा की आवाज अनसुनी मत करो।

जीवन का हर दिवस हमारा, पर्व दिवस बन जाए।
मंगल फूल खिलें मानस में, स्वप्न सफल बन जाए।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११. अपने पथ पर दृढ़ता से बढ़े चलो

मानव! अपने पथ पर दृढ़ता से बढ़े चलो। पर्वतों के हिमाच्छादित शिखरों को देखकर चरणों को शिथिल मत बनाओ। यह परीक्षण का समय है। इस घने कुहासे के उस पार तुम्हारी सफलता की अमर कहानियां लिखी पड़ी है। अपनी संकल्प-शक्ति को जागृत करो। यह खड़े-खड़े सपनों की मायावी सृष्टि का निर्माण कर मन बहलाने का अब समय नहीं है। अवसर और साधनों की प्रतीक्षा में प्रगति का द्वार बंद मत करो। बढ़ने की इच्छा रखने वाला आशावादी कठिनाई में भी अवसर खोज लेता है। निराशावादी और पलायनवादी के लिए अवसर स्वयं कठिनाई बन जाता है। सोचो, आवश्यकता आविष्कार की जननी है। ज्यों-ज्यों तुम्हारे चरण आगे बढ़ेंगे त्यों-त्यों मार्ग अपने आप मिलता जाएगा। तुम्हारे वज्र संकल्पों के महाताप से यह हिमखण्ड पिघल-पिघल कर तुम्हारे श्रान्त, क्लान्त चरणों का प्रक्षालन करने एवं स्वागत करने के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लिए एक महास्रोत के रूप में सामने आएगा।

पथिक! अपने पथ पर दृढ़ता से बढ़े चलो।

जो साहस से चलता उसका,
भाग्य देव चलता है।
उसके शुभ सपनों का वट,
शतशाखी फलता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२. पुरुषार्थ

मानव! तुम पुरुष हो, पुरुष होकर भी पुरुषार्थ से कतराते हो, घबराते हो, जी चुराते हो, तुम्हारे जीवन की यह कैसी विडम्बना है।

मानव! वह तुम्हीं तो हो जो अनन्त आकाश से मुक्त विहग की भांति उड़ सकते हो, अगाध सागर के जल से प्राप्य प्राप्त कर सकते हो, समग्र भूखण्ड की चंद घंटों में परिक्रमा कर सकते हो। तुम्हारे बाहु के आगे कुछ भी अजेय नहीं। फिर भी तुम रुकते हो, निराश होते हो, सर्वत्र अंधकार-सा छाया हुआ देखते हो। मानव! क्या ये तुम्हारे पुरुष कहलाने पर कठारे व्यंग्य नहीं है।

मानव! तुम निराश क्यों होते हो? तुम्हारे पुरुषार्थ के प्रत्येक चरण का सुफल तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा। लोह-पिण्ड पर लगी प्रत्येक हथोड़ी अपने चोट से शून्य नहीं हुआ करती। जो यह दिखाई देता है कि अंतिम हथौड़ी ने ही इसके टुकड़े किए हैं, क्या उससे पहले की प्रत्येक चोट का

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उस पर कोई असर नहीं? मानव! तुम अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक कार्य करते चले जाओ, तुम विश्वास रखो, तुम्हारा प्रत्येक कार्य तुम्हें तुम्हारे उद्देश्य के निकट से निकट करता चला जा रहा है।

मानव! तुम भूलो मत पुरुषार्थ तुम्हारे जीवन का मुख्य कर्म है और सफलता मिलना तुम्हारे पुरुषार्थ का परिणाम। तुम्हें पुरुषार्थ के बीज बाते रहना हैं, क्योंकि सफलता के फल उसी बीज से उत्पन्न होते हैं।

पुरुषार्थी के पद चिह्नों पर,
भाग्य सदा चलता है।
उसके नयनों में श्रद्धा का,
शुभ दीपक जलता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३. एकाकी ही आगे बढ़ो

विद्युत कौंध रही है। बादल गरज रहे हैं। इस संकरीली और पथरीली पगडंडी पर अंधेरे का काला राक्षस मुंह बाए खड़ा हुआ है। ऐसी विषम बेला में तुम अकेले हो। इस संग्राम के साथ देने वाला कोई भी मित्र यहां दिखाई नहीं दे रहा है। तुम्हारी विवशता को मैं अच्छी तरह समझता हूं, पर मानव! यह परीक्षा की घड़ी है, निराशा की काली चादर को चीरकर ही प्रभात का आगमन होता है।

मानव! जब आपत्तियां सामने आती हैं, तब उनकी जड़ें बहुत गहरी दिखाई देती हैं, किन्तु उनका समय अधिक लम्बा नहीं होता। उनका पटाक्षेप अप्रत्याशित और सहत रूप से हो जाता है। जीवन के अनेक अनुभवों ने इस तथ्य को बिलकुल प्रमाणित कर दिया है।

मानव! स्थिरता और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते रहो। आपत्तियों का निराकरण सोचने से नहीं होगा, बढ़ने से होगा। तुम्हारी सफलता और

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रगति के साथ सारी स्थितियां अनुकूल हो जाएंगी। अंधेरे के स्थान पर आलोक दिखाई देगा। फूलों की कोमल पंखुड़ियां बनकर कठोर पत्थर भी तुम्हारे चरण चूमेंगे। चमचम करने वाली विद्युत तुम्हारे मार्ग में प्रकाश बिछाने का काम करेगी। गरजने वाले बादल तुम्हारी जय-विजय के नारों के नगारे बजाएंगे। घबराओ मत।

मानव! एकाकी ही आगे बढ़ो।

जीत ज्योति की ही होगी,
हो चाहे गहन अंधेरा।
चरण बढ़ाओं साहस से तुम,
टूटेगा यह तम का घेरा।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१४. पुरुषार्थ भाग्य का पिता है

तुम्हारे द्वारा बोया हुआ बीज जब अंकुरित होता है तब संसार उसे भाग्य कहता है। वह कोई दैवी सत्ता या चमत्कार का रूप नहीं है। उससे किंचित भी डरने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा पुरुषार्थ ही उसका पिता है।

विश्व-मंच पर जितना भाग्य शब्द का दुरुपयोग हुआ है, उतना संभवतः किसी शब्द का भी नहीं। इसके नाम से असंख्य मनुष्य जीवन-संग्राम में पराजित हो गए व हथियार डालकर आलस्य-अकर्मण्यता के बन्दी बन गए। उनका सारा तेज नष्ट हो गया, अंधविश्वास की अंधी गुफाओं में सड़-सड़ कर उन्होंने अपना समय पूरा किया।

मानव! तुम्हारे अतीत ने वर्तमान को बनाया है और वर्तमान भविष्य को बनाएगा। तुम पूर्ण स्वतंत्र हो, उत्थान-पतन व हित-अहित के लिए

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वयं ही जिम्मेवार हो। बाहर की कोई भी दृश्य अदृश्य शक्ति तुम्हें न ऊंचा उठा सकती है और न नीचे गिरा सकती है।

सभी सिद्धियां श्रम अधीन है,
श्रम से मत घबराओ।
श्रम की बूंदों का सिंचन कर,
जीवन सफल बनाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१५. जीवन पड़ाव नहीं, यात्रा है

जीवन पड़ाव नहीं यात्रा है। मानव! बढ़े चलो—बढ़े चलो। नदी का जीवन बहने में हैं, रुकने में नहीं। प्रकृति अपने निश्चित क्रम से बढ़ती रहती है। उसे रुकना अच्छा नहीं लगता। चलने वाले को उसका वरदान मिलता है, रुकने वाले को अभिशाप। सौभाग्य की लक्ष्मी मौखिक निमंत्रण से प्रभावित नहीं होती। उसे गतिशील चरणों का सबल आश्रय चाहिए। कल्पनाओं के मधुर स्वप्नों में उसका स्थायित्व नहीं होता। जीवन का रस और माधुर्य आकाश से नहीं टपकता। इसी सामान्य धरातल की पीली और चिकनी मिट्टी में उसका भंडार भरा पड़ा है। किंतु प्रवहमान जीवन धारा में गतिरोध पैदा कर तुम उसके दर्शन नहीं कर सकोगे।

'आगे नहीं बढ़ना और अलास्य में लिप्त रहता मिट्टी में मिलना है'—इस सनातन सन्देश को हृदय के पत्र पर सोने के अक्षरों में अंकित कर लो। याद रखो 'जब मनुष्य सोता है तब कलियुग होता है, जागता है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तब द्वापर युग, कर्म करने के लिए उद्यत होता है तब त्रेतायुग और जब कर्म करने में संलग्न होता है तब सत्युग होता है।' मनु का यह घोष तुम्हारी कुम्भकर्णी निद्रा उड़ा रहा है।

देखो मानव! उधर देखो, सूरज चलता है, टिमटिमाते तारे भी अपनी गति से चलते हैं, तुम भी चलो, तुम भी चलो।

जीवन के प्रति अहोभाव का,
भाव बढ़ाते जाओ।
सदा आत्मविश्वास और,
उल्लास बढ़ाते जाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१६. आज का संकल्प कल की सफलता

मानव! दृढ़ निश्चय से एक चोट का जितना प्रभाव होता है, उतना आधे मन से लगाई गई हजारों चोटों का नहीं होता। जो भी करो वह सर्वात्मना करो। मंजिल तक पहुंचने के लिए यदि प्राणों का उत्सर्ग भी करना पड़े तो तैयार रहो।

मानव! गणित की प्रक्रियाओं से मार्ग को मापने में समय का अपव्यय मत करो। यदि संकल्प-बल सुदृढ़ है तो संसार की कोई भी शक्ति तुम्हारी सफलता में अवरोध नहीं बन सकती। यदि उसमें थोड़ी भी न्यनूता है तो बड़े से बड़ा सहयोगी तुम्हें लक्ष्य पर नहीं पहुंचा सकता।

मानव! संकल्प का विकास करो। तुम्हारी चेतना की वीणा में हर समय 'संकल्प-संकल्प' का संगीत मुखरित होना चाहिए। आज का

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संकल्प कल की सफलता है। यह एक सनातन और अनुभव सिद्ध सत्य है।

जहां-जहां चाह होती है,
वहां-वहां मिल जाती राह।
जब संकल्प प्रबल होता है,
बढ़ता जाता प्रगति प्रवाह।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१७. अनुभव जीवन की महान निधि

मानव! हृदय की डायरी में प्रतिभा की तीक्ष्ण लेखनी से अपनी यात्रा के अनुभवों को अंकित करते जाओ। भविष्य में यह भंडार तुम्हारे जीवन की महान निधि बन जाएगा। छोटे-से-छोटे अनुभव को हाथ से मत जाने दो। अनमोल रत्न समझकर उसकी पूरी सार-संभाल करो। पथ में फूल मिलते हैं, तीखे शूल मिलते हैं, उत्कर्ष और अपकर्ष के विविध चित्र तुम्हारी आंखों के सामने आते रहते हैं। उनसे तुम्हें जितना सीखने समझने को मिलता हैं, उतना विश्वविद्यालयों में मिलना भी संभव नहीं।

मानव! तुम्हारी यात्रा बहुत लंबी है। कभी भीषण सर्दी से तुम ठिठुर जाओगे। कभी तीक्ष्ण ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप से पावों में फफोले हो जाएंगे। कभी बादलों की घुमक्कड़ टोली द्वारा मार्ग में कीचड़ बिछाकर तुम्हें फंसाने का प्रयास किया जाएगा। उस समय तुम्हारा अनुभव कोष ही प्रेरणादायक और मार्ग-दर्शक बनेगा। उसे समृद्ध बनाएं बिना कोई भी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपने सपनों को साकार नहीं बना सकता।

दूसरों के सैकड़ों अनुभवों से अपने एक अनुभव का अधिक महत्त्व है। पड़ोसी के चिराग से तुम्हारे घर का तिमिर कभी दूर नहीं हो सकता।

सत्य-तथ्य से मुंह मोड़कर,
जो कल्पित स्वप्नों में बहता।
नहीं सफलता का रवि उसके,
जीवन गगनांगण में उगता।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१८. सफलता का मंत्र–निरन्तरता

साधना के बिना फल प्राप्ति की इच्छा करना भयानक भूल है। जब तक तुम्हारा ललाट स्वेद-बिन्दुओं से गीला नहीं हो जाता, तब तक तुम मंजिल पाने के सच्चे अधिकारी नहीं हो। उससे संतोष और स्वाभिमान की वृद्धि न होकर अपकर्ष और हीनता का भाव जागृत होता है। सस्ता फल चाहने वाला व्यक्ति सदा के लिए सस्ता बन जाता है। उसकी आत्मा विद्रोह करने लगती है। सब कुछ पाकर भी वह अपने आपको दरिद्र और अभिशप्त अनुभव करता है।

मानव! चलने के व्रत को जागरुकता से निभाओ। फल की ओर मत देखो। आंधी में चलो, तूफान में चलो, निर्जन और सुनसान में चलो। एक क्षण के लिए भी मत रुको। सफलता के लिए निरन्तरता का गुण सबसे अधिक महत्त्व रखता है।

मानव! स्थायी सफलता के लिए पथ की गहराई को अच्छी तरह से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मापना भी आवश्यक है। 'शॉर्टकट' को ढूंढने वाला व्यक्ति बीच में लड़खड़ा जाता है।

बन जाता है निपुण मूढ़ भी,
करने से अभ्यास।
चलते रहने से बढ़ता है,
जीवन में विश्वास।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१९. विष-घट या अमृत-कलश

जीवन में कठिनाईयों का वजन उठाने से योग्यता बढ़ जाती है—प्रकृति का यह नियम अनुभव सिद्ध है। इसमें तनिक भी सन्देह करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे अवस्था के साथ शारीरिक अवयवों की वृद्धि होती है, वैसे ही कठिनाइयों के सम्पर्क से शक्ति और योग्यता का विकास स्वतः होता जाता है। तुम्हारी दृष्टि बहुत स्थूल है। तुम केवल प्रारम्भ देखते हो, परिणाम नहीं देखते। कठिनाइयां आते समय विष का घट लेकर आती है, किंतु जाते समय अमृत का कलश छोड़कर जाती है।

मानव! घुटनों को सीधा रखो। कंधों को मजबूत बनाओ। सीना तानकर चरण पर चरण बढ़ाए चलो।

आज जो कठिनाई तुम्हें हिमगिरी के समान दुरुह प्रतीत हो रही है, कल वह रजकण के समान बिलकुल लघु रूप में तुम्हारे सामने आएगी।

मानव! कठिनाइयों को चुनौती मत समझो। उनका स्वागत करो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उन्हें स्नेह से गले लगाओ। ये तुम्हें पराजित करने नहीं आती, किंतु शृंगार बनकर तुम्हारे जीवन को सजाने के लिए आती है।

जहां जिन्दगी वहां समस्या,
दोनों का सम्बन्ध सनातन।
नई ज्योति पैदा हो जाती,
जब-जब होता है संघर्षण।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२०. अनुपम उपहार–समय

खोए हुए हीरे-मोती पुनः मिल सकते हैं, पर समय का धन लाख प्रयत्न करने पर भी वापस नहीं मिल सकता। संसार में ऐसे लोग बहुत हैं जो बाद में पश्चात्ताप के आंसू बहाते हैं, किन्तु जब समय सामने होता है तब उसे उपेक्षा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

समय के केश सामने मुंह की ओर लटकते रहते हैं। उसका सिर पीछे से गंजा होता है। जो पहले से सावधान और जागरूक होता है, वह उसका सही उपयोग कर सकता है बाद में सोचने वाले और दौड़ने वाले उसे पकड़ने में सफल नहीं हो सकते।

मानव! जो समय के धन को निरर्थक समझता है। वह स्वयं निरर्थक बन जाता है, जो उसका अपव्यय करता हैं, उसका जीवन मिट्टी में मिल जाता है। हर क्षण का पूरा उपयोग करने वाला ही विकास की सीढ़ी पर आगे बढ़ सकता है। जो समय का कर्जदार बनता हैं, उसे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ब्याज सहित चुकाना होता है, जो उसके लिए त्याग करता है, उसे दुगुना मिलता है।

मानव! समय तुम्हारा परम मित्र है। उसका स्वागत करो। वह तुम्हारे लिए अनुपम उपहार लेकर आया है।

जागरुक के लिए यहां पर,
अवसर ही अवसर है।
जीवन के हर क्षण में उसके,
उत्सव ही उत्सव है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२१. छिन्द्रान्वेषी मत बनो

तुम्हें दूसरों के सुराख बहुत चौड़े दिखाई देते हैं। अपने सुराखों की ओर तुम कभी भी ध्यान नहीं देते। एक संस्कृत कवि ने कहा—

यदा पश्यामि स्वदोषान दृष्टिः संकुचिता भवेत्।
विशाला सैव जायेत प्रेरेषां दोष-दर्शन।।

जब मैं अपने दोष देखता हूं तो मेरी आंखें छोटी हो जाती है। इस अशांति के कंटाकीर्ण पथ से जीवन रथ को शीघ्रताशीघ्र मोड़ने का प्रयास करो। दूसरों के छिद्रों और अवगुणों की ओर आंखें लगाते रहना तुम्हारे जीवन के लिए भयावह अभिशाप होगा। सोने में खाद होती है, मक्खन में छाछ होती है व आम में गुठली होती है। तुम्हारे विचार सोने, मक्खन व आम पर केन्द्रित होने चाहिए, खाद, छाछ व गुठली पर नहीं। मनुष्य भूलों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का पुतला है। उसमें तुम्हें जितनी अच्छाई मिले, हंस बनकर तुम अच्छाईयां ग्रहण करते रहो।

सदा नकारात्मक चिन्तन से,
जो मनुज ग्रसित होते है।
करते है अनुभव अभाव का,
जीवन में रीते होते हैं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२२. मन को दे शांति का संदेश

मन की समाधि उत्कृष्ट योग है। ज्ञान, कर्म और भक्तियोग से भी इसका ऊंचा स्थान है। ज्ञान की आराधना में, सत्कर्म के विकास में व भक्ति-दर्शन के आधार को सुदृढ़ बनाने में मनःसमाधि–योग का विकास सबसे पहले चाहिए। जिसका मन चंचल होता है, आवश्यकता से अधिक संवेदनशील होता है, अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों से बहुत अधिक प्रभावित होता हैं, उसके चरण बीच में लड़खड़ा जाते हैं। जिसका मन समाधिस्थ हो जाता हैं, जो निश्चित लक्ष्य से इधर-उधर नहीं झांकता, वह अपनी जीवन यात्रा में कृतकृत्य बन जाता है।

मानव! मनः-समाधि–योग के विकास के लिए आवेश की प्रकृति में परिवर्तन करो। छोटी-छोटी बात के लिए अपनी शांति भंग मत करो। तराजू के दोनों पलड़ो को समान रखो। न हीन बनो, न अभिमानी। यह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संतुलन तुम्हारे जीवन के शुष्क पल्लवों में पीयूष की अमर धारा बहा देगा।

मन से जीत जगत में होती,
मन से होती हार।
मन को स्वस्थ बनाने से,
मिलता उन्नति का द्वार।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२३. भाग्य का स्वामी

मानव! जब एक कुम्भकार अपनी विशिष्ट क्रियाओं के द्वारा एक मृतिका-पिण्ड को आवश्यकतानुसार किसी भी भाजन का रूप दे सकता है, तो तू भी अपने भाग्य के इस मृतपिण्ड को अवश्य ही इच्छित रूप दे सकता है। परन्तु याद रख आज की तेरी प्रत्येक क्रिया तेरे भाग्य के भावी रूप के निर्माण का आधार है। तुझे कैसा भाग्य चाहिए, यह निर्णय यदि तेरे मस्तिष्क में नहीं है तो तू उसे स्वेच्छानुरूप कोई निश्चित रूप नहीं दे सकेगा। इसलिए मानव सावधानीपूर्वक अभी से उस निर्णय में लग जा।

मानव! तुझे अपने सामर्थ्य पर पूरा विश्वास होना चाहिए। भाग्य के सामने झुककर चलना तो उन अकर्मण्य व्यक्तियों का काम है, जिनकी शक्ति ने हार स्वीकार कर ली। जवानी न कभी हारना चाहती है और न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ही कभी विवश होकर झुकना। इसलिए मानव! भाग्य का दास मत बन, किन्तु उसका स्वामी बन कर जी।

मंजिल तो मिल ही जायेगी,
अन्तर में उल्लास चाहिए।
पथिक! सफलता मिल जाएगी,
जीवन में विश्वास चाहिए।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२४. महान शत्रु आलस्य

सावधान रहो, सावधान रहो।, जीवन का एक महान शत्रु कांटो का जाल बिछाए मार्ग में खड़ा है। प्रारम्भ में वह बड़ा मधुर व्यवहार करता है। किंतु अवसर पाकर वह अपने जाल में फंसा लेता है और सदा के लिए अपना बन्दी बना लेता है।

मानव! वह शत्रु है आलस्य। निराशा, अकर्मण्यता और दरिद्रता ये तीनों उसकी अभिन्न सहचरणियां है। जिस तरह धूप के साथ ताप का होना निश्चित है। उसी तरह उसके साथ इन तीनों का होना भी बिलकुल निश्चित है।

मानव! विश्राम का प्रलोभन देकर वह तुम्हें बार-बार रोकने का प्रयास करेगा। किंतु प्रगति तुम्हारा धर्म है। यदि एक बार भी तुम उसके

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भ्रामक जादू में फंस गए तो सदा के लिए अपने मार्ग से भटक जाओगे, रुकने वाले सदा के लिए रूक जाते है।

जो पुरुषार्थहीन आलसी,
भाग्य देव उसका है सोता।
जीवन की स्वर्णिम घड़ियों को,
व्यर्थ हाथ से वह खोता।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२५. तंत्र नहीं मंत्र अपनाओ

मानव! शस्त्र को जानो और छोड़ो। निःशस्त्रीकरण का विकास करो। सारे शास्त्रों का निचोड़ शस्त्र का निषेध है। शास्त्र और शस्त्र की उपासना एक साथ नहीं हो सकती। शास्त्रों में समता का मंत्र है, और शस्त्रों में शक्ति का तंत्र है। जीवन का रथ तंत्र से नहीं, मंत्र से चलता है। शक्ति से नहीं समता से बढ़ता है। विकास के मार्ग को प्रशस्त बनाने के लिए तंत्र नहीं, मंत्र चाहिए। शक्ति नहीं समता चाहिए। हिंसा नहीं, अहिंसा चाहिए। शास्त्र और शस्त्र का यह भेद दर्शन विवेक के नेत्र खुले बिना हो नहीं सकता।

मानव! विवेकी बनो। शस्त्र और शास्त्र के भेद को समझो 'सत्थ पइण्णा'। (शस्त्र परीक्षा) को जीवन के व्यवहार में लाओ। इसके लिए ऊपर की इठलाती हुई लहरों को गिनने से काम नहीं चलेगा। समुद्र में गहरी डुबकी लगाओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मानव! शस्त्र बाहर नहीं भीतर है। तुम्हारा हृदय और मस्तिष्क ही शस्त्रालय है। उस शस्त्रालय को खाली किए बिना तुम्हारा निःशस्त्रीकरण का अभियान कभी भी सफल नहीं हो सकता। बाहरी शस्त्र जड़ हैं, पंगु है। स्वतः चालित नहीं है। उसे संचालित करने वाली तुम्हारी वृत्तियों का समाधान करो।

सांस सांस आनन्द भाव से,
तुम विभोर बन जाओ।
कुण्ठा और निराशा का स्वर,
साथी! दूर हटाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२६. खिड़कियां खुली रखो

मानव! जिज्ञासा विकास का पहला सूत्र है। अपने मन को रूढ़ मत बनाओ। सत्य की खोज के लिए हर समय तत्पर रहो। धरती और आकाश व जल और स्थल से तुम्हें जो भी नया सन्देश सुनाई देता हैं, उसे शांति से हृदयंगम करने का प्रयास करो।

मानव! संसार के कण-कण में प्रकाश की किरणें बिखरी हुईं हैं, किन्तु जो आंखों की खिड़कियां खुली रखता है, उनका साक्षात्कार वही कर सकता हैं। मित्र! क्षुद्र और संकीर्ण दृष्टिवाला मनुष्य स्वयं के ही हाथों स्वयं के लिए लौह दीवारें खड़ी करता हैं। उनमें सदा के लिए बन्दी हो जाता हैं।

मानव! जीवन की भूमि को उर्वर बनाओ व क्षण-क्षण में होने वाली सत्य की अमृत वर्षा से सरसब्ज बन जाओ।

कब, क्यों, कैसे, कहां, कौन क्या,
छः प्रश्नों पर ध्यान लगाओ।
जिज्ञासा की लौ लेकर,
मन में ज्ञान ज्योति जगाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२७. संभव और असंभव

संभव ने असंभव से पूछा—तुम कहां रहते हो? असंभव ने कहा—निबल के स्वप्न में। सफलता की सीता के पांव चूमने के लिए साहस से काम लेना होगा। असंख्य उर्मियों से इठलाते हुए सागर के वक्षस्थल पर संकल्पशक्ति का फौलादी पुल तैयार करना होगा। मानव! संभव और असंभव की कल्पना घातक हैं। उसका उद्‌गम तुम्हारी ही मस्तिष्क की कल्पनाओं से होता है। संकल्प विकल्पों के छिद्रों से अपने जीवन को चलनी के समान मत बनाओ। चरणों की द्रुतगामी प्रगति के साथ असंभव स्वतः संभव में परिणित होता जाएगा। किन्तु बिस्तर पर लेटे-लेटे केवल मस्तिष्क की शिराओं को हिलाने से ऐसा होना सम्भव नहीं हैं।

कार्य असंभव जो लगता है,
हो यदि दृढ़ विश्वास।
वह भी संभव हो जाता है,
मिलता नव उल्लास।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

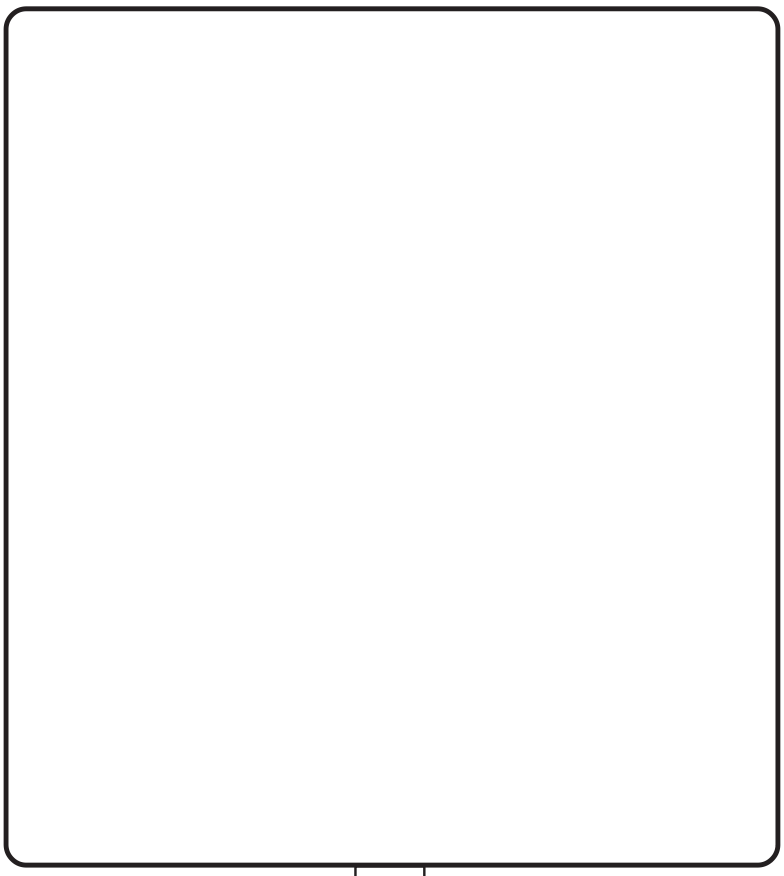

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लेखक की प्रमुख कृतियां

- जैन योग की परम्परा
- भारतीय दर्शन के प्रमुखवाद
- जैन योग पारिभाषिक शब्दकोष
- पाथेयम्
- सुखी और सफल जीवन की दिशाएं
- ज्योति जले विश्वास की
- जीवन एक उपहार
- हर सांस गीत बन जाये
- मन को शान्त बनाएं हम
- पहचान
- अणुव्रत का दीवट : नैतिकता की बाती
- स्वर्ण और सुगंध
- सत्यम् सुन्दरम्
- निर्माण का पथ
- साक्षात्कार
- मन ने कहा
- स्वर्ग-नरक
- शतदल
- नवनीत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राची की अभिनव लाली जागरण का अभिनव संदेश लिए तुम्हें बार-बार जगा रही है, आलस्य का परित्याग करो। उठो! उठो मानव! यह सोने की वेला नहीं है। अकर्मण्यता के चक्रव्यूह को तोड़कर जीवन की उर्वर भूमि में प्रवेश करो। अपनी अन्तर्निहित शक्तियों का उपयोग कर इस मूल्यवान हीरे को और भी चमकीला बनाओ।

मुनिश्री राकेशकुमारजी एक प्रज्ञावान्, स्वाध्यायशील, समृद्धवक्ता और तुलनात्मक दार्शनिक हैं। आपकी वक्तृत्वकला के साथ लेखन शैली प्रभाविनी है, सद्यः जनमानस पर अपना स्थान बना लेती है। आपने अणुव्रत, जैन धर्म और तेरापंथ धर्मसंघ से संबंधित ऐतिहासिक कार्य किए है। देश के शीर्षस्थ नेताओं और साहित्यकारों से आपका निकट संपर्क रहा। अहिंसा, विश्व शांति, संस्कृत भाषा, पर्यावरण आदि विषयों पर आयोजित राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में आपके प्रभावशाली वक्तव्य हुए है। आप आचार्यश्री महाश्रमण के योग्य शिष्य हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org